डॉ. बिपिन पाण्डेय

कुण्डलिया

बंदर मामा चल दिए, बन ठनकर ससुराल।
आँखों पर चश्मा लगा, पहने टाई लाल।
पहने टाई लाल, घड़ी प्यारी सी बाँधे।
सिर पर पहने हैट, बैग लटका है काँधे।
चलें अकड़ते खूब,समझते खुद को गामा।
फिसले गिरे धड़ाम, उठे झट बंदर मामा।।

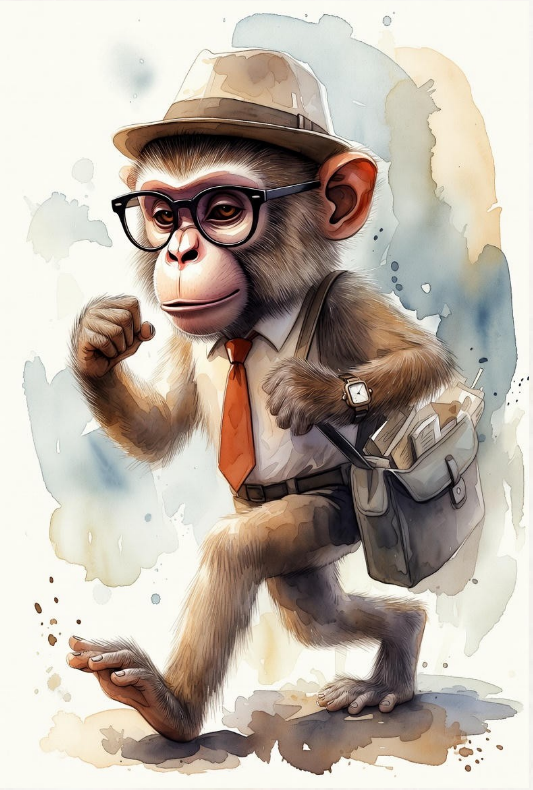

बिल्ली बैठी पढ़ रही,सुबह-सुबह अखबार।
पढ़ खबरें रोने लगी, हो बेबस लाचार।।
हो बेबस लाचार, जानवर भटकें दर-दर।
हुए बाग वन नष्ट, बड़ा खतरा है सिर पर।
देख कठिन हालात,उड़ाए मानव खिल्ली।
कहाँ शरण लें ईश ,सोचते कुत्ते बिल्ली।।

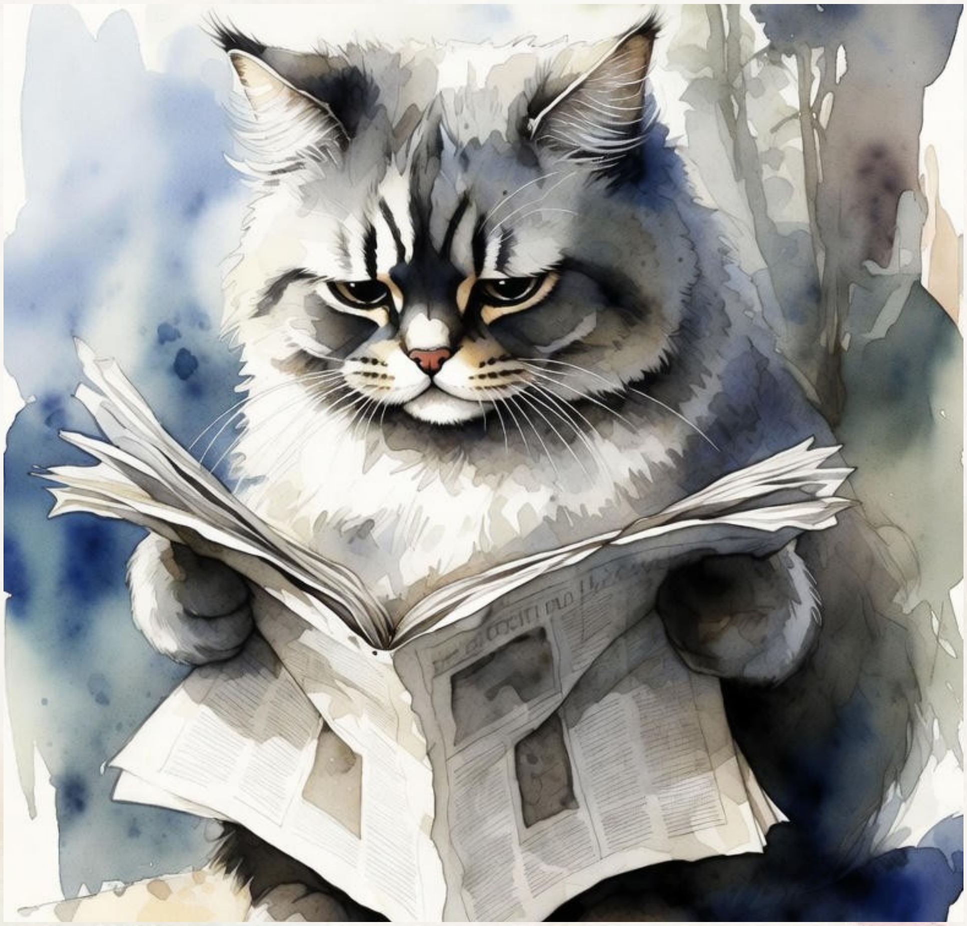

कोई हो मौसम सदा, देती सबको मात।
मछली पानी में रहे, दिन हो चाहे रात॥
दिन हो चाहे रात, हमेशा खूब नहाए।
खाँसी छींक जुकाम,रहें उससे घबराए।
ताल नदी या झील,नीर में रहती खोई।
करती छप्प छपाक,न डाँटे उसको कोई॥

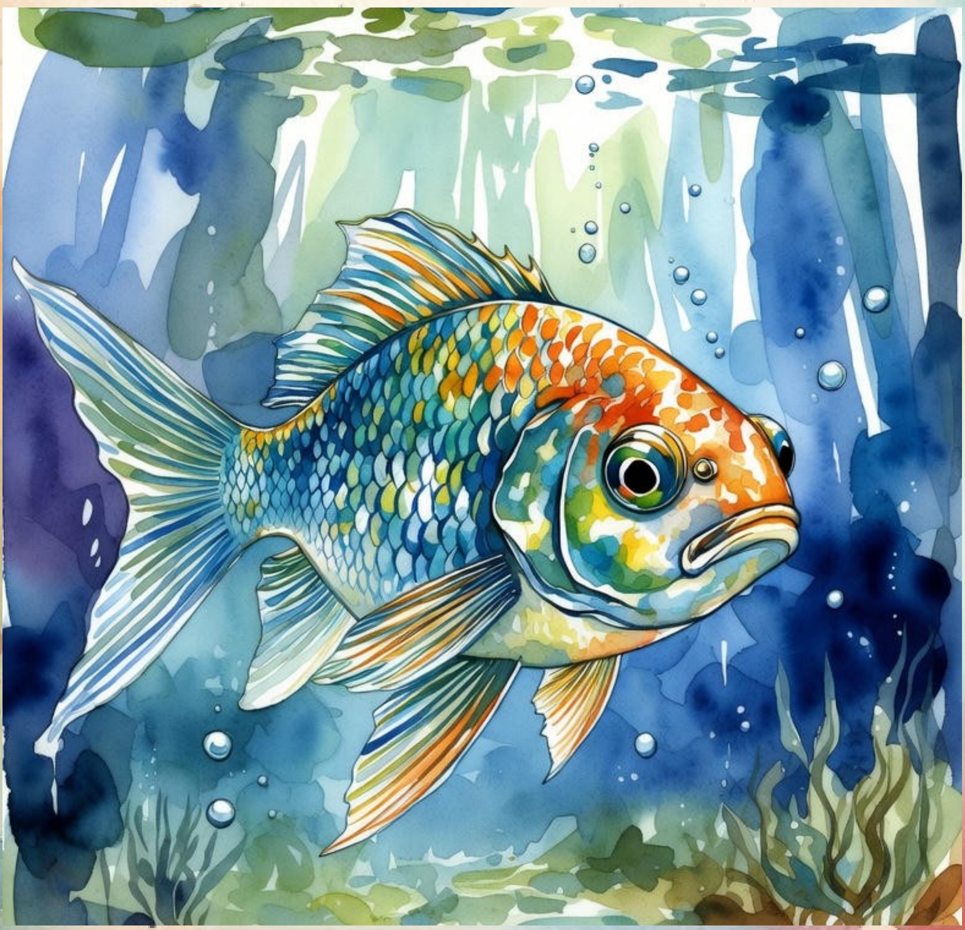

जंगल में होने लगा,जोर-जोर से शोर।
भालू था दूल्हा बना,नाच रहा था मोर।।
नाच रहा था मोर,कोकिला गाना गाए।
बंदर पीटे ढोल,लोमड़ी बीन बजाए।
आए ऊँट जिराफ,कामना करते मंगल।
देख खास माहौल,खुशी में झूमा जंगल।।

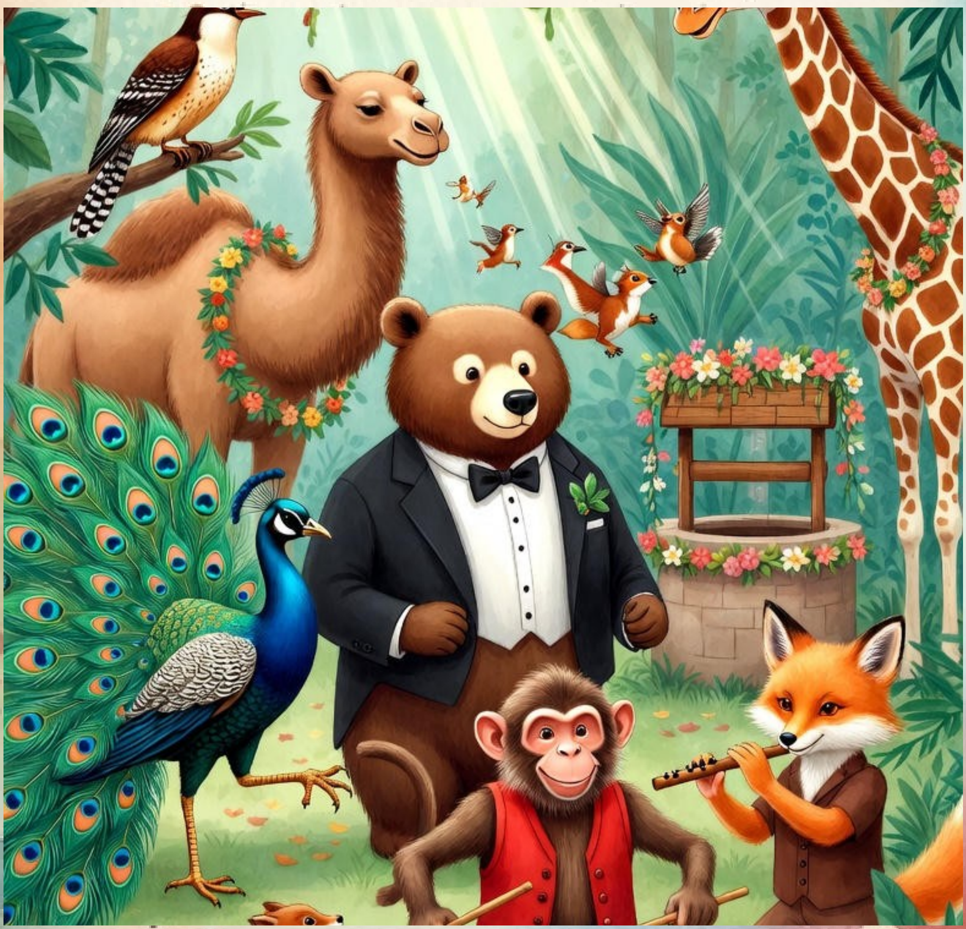

चलती है टिक-टिक घड़ी,समझाती ये बात।
चलो समय के साथ में, बदलेंगे हालात।।
बदलेंगे हालात, परिश्रम करना सीखो।
करो सदा निज कर्म,कभी मत रोओ चीखो।
होगी पूर्ण जरूर ,हृदय जो इच्छा पलती।
बात यही बस एक, घड़ी कहती है चलती।।